जिला उद्योग केन्द्र, जालोर

जिले की औद्योगिक संभावनाए – 2018–19

❖ जिले की रूपरेखा

1.1 जिला एक नजर में :– दिल्ली से दक्षिण की ओर जाने वाले उत्तर पश्चिम समदड़ी–पालनपुर रेलमार्ग एवं मरूभूमि में प्रवाहित होने वाली जवाई नदी के तट पर स्थित जाबालीपुरम् (जालोर) ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक वैभव के कारण जगत प्रसिद्ध नगर है, यह सोनगरा चौहानों की शौर्य गाथा, महर्षि जाबालि एवं नाथपंथी चमत्कारी योगी जलन्धरनाथ की तपस्थली संस्कृत के कालजयी महाकवि माघ (उपमा कालिदासस्य भारवैं अर्थ गौरवमद्ंडि पद लालित्य, माघे सन्ति त्रयोगुणा) सुभद्रार्जून विवाह स्थली का आदि वृतांतो से भरपूर ऐतिहासिकता एवं आध्यात्मिकता को संजोय हुए है। यहां मध्यकालिन मारवाड़ का अन्तिम शक्तिशाली दुर्ग था, जिसका निर्माण प्रतिहार राजा नागभट्ट प्रथम ने (730 ई. से 760 ई.) में करवाया गया बाद में सोनगरा चौहानों ने परमारों से छीनकर इसे अपनी राजधानी बनाया । यह दुर्ग कणियागिरी पर्वत (स्वर्णगिरी) पर 1200 फीट की उंचाई पर स्थित सोनगढ़ के नाम से विख्यात है। उद्योतन सुरि की कुवलयमाला की रचना जालोर दुर्ग में ही हुई । विद्या की दृष्टि से शहर में विद्यमान भोजनकालीन संस्कृत पाठशाला अर्थात तोपखाना इस बात का साक्षी है कि परमारों के काल मे ंयह विद्या अध्यय का बड़ा केन्द्र रहा है। खगोल शास्त्र के प्रकाण्ड विद्ववान ब्रहागुप्त इसी जिले की विभूर्ति थे जिन्होंनें ब्रहास्फूट सिद्धान्त की रचना की थी।

1.2 सामान्यः– जालोर जिले की कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 10640 वर्ग किलोमीटर है।

1.3 भौगोलिक स्थिति /भौगोलिक क्षेत्र

यह जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण–पश्चिम भाग में 24''37' से 25''49' उत्तरी अक्षांश तथा 71''11' सें 73''05' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेंत्रफल सर्वे ऑफ इण्डिया के अनुसार 10640 वर्ग किलोमीटर है, जो कि राज्य का 3.11 प्रतिशत क्षेत्र घेरे हुए है। क्षेत्रफल दृष्टि से जिले का 12 वां स्थान है। जिले की उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर जिला जोधपुर, उत्तरी पूर्वी सीमा पर जिला

पाली, दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर जिला बाडमेंर, दक्षिणी पूर्वी सीमा पर जिला सिरोही एंव दक्षिणी सीमा पर गुजरात राज्य स्थित है।

1.4 जिले में भूमि का उपयोगः–

:– जिले का अधिकांश भाग चतुर्थ युगीन व अभिनूतन कालीन जमावों सें आच्छादित है। ये जमाव वायु परिवहित वायु रेत (बालू), नवीन कछारी मिट्टी, प्राचीन कछारी मिट्टी तथा ग्रिट के रूप में जिले के अधिकांश धरातल पर टृष्टिगोचर होते है। चट्टानो में मालानी ज्वालामुखी तथा जालोर ग्रेनाइट प्रमुख है। जिले की मिट्टी अनुसार क्षेत्रफल निम्नानुसार है–

1. दोमट–107096 हैक्टर
2. बलुई दोमट–663745 हैक्टर
3. काली मिट्टी–94545 हैक्टर
4. खण्डा – 191216 हैक्टर

1.5 प्राकृतिक–भूगोल संबंधीः–

पहाडियॉ :– भीनमाल तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में जिले की सबसे ऊॅची पहाडियां जसवंतपुरा की पहाडियॉ है। जिसकी सबसे ऊंची चोटी सुन्धा 991 मीटर (3252 फीट) ऊंची है। यह जिले की सबसे ऊंची पर्वत चोटी है। जिले में अन्य छोटी–छोटी पहाडियॉ है जो अरावली पर्वतमाला का हिस्सा है। आहोर, भीनमाल लाखावास, जालोर तथा जसवंतपुरा के पास अरावली की पहाडियां है जिनका समुन्द्रतल से ऊंचाई 173.73 मीटर है।

नदियॉ :– सम्पूर्ण जिला लूनी बैसीन का एक भाग हैं। अतः लूनी नदी तथा उसकी सहायक जवाई सूकडी, खारी बाण्डी, आकोली,बडगांव, जेतपुरा तथा सागी नदियां जिले के प्रवाह तंत्र का निर्माण करती है। सभी नदियां बरसाती है. जो मानसून के बाद सूख जाती है। जिले में कोई बारहमासी नदी नही है।

1.6 प्रशासनिक संरचना :–

प्रशासनिक दृष्टि सें जालोर जिला मुख्यालय पर जिला कलक्टर कार्यालय तथा विभिन्न जिला स्तरीय कार्यालय स्थित है। जिले को पांच विधान सभा क्षेत्र है। राजस्व प्रशासन के लिए जिले को नौ तहसीलों जालोर, भीनमाल, रानीवाडा, सांचौर, सायला, बागोडा, जसंवतपुरा, चितलवाना एवं आहोर तथा नौ उपखण्ड

अर्थात जालोर, भीनमाल, आहोर, सायला, बागोड़ा रानीवाडा, जसवंतपुरा, सांचौर व चितलवाना में विभाजित कर नौ पंचायत समिति कार्यालय विकास अधिकारी के नाम से स्थापित किये गये। जिले में एक नगर परिषद जालोर एवं दो नगर पालिका क्षेत्र भीनमाल एवं सांचौर है। कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस प्रशासन हेतु जिला मुख्यालय पर एक पुलिस अधीक्षक, एक अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तथा तीन उप पुलिस अधीक्षक कार्यालय जालोर, भीनमाल व सांचौर में स्थित है। उनके अधीन 19 पुलिस थाने एवं 9 चौकी है। जिले में जालोर, भीनमाल एवं सांचौर तीन उपखण्ड मुख्यालयों पर उपकारागृह है।जिले में राजस्व ग्राम 793, आबाद ग्राम 795, गैर आबाद 7, ग्राम पंचायत 274, पटवार मण्डल 281, भू–निरीक्षक मण्डल 32 है। जिले से संबधित जनसंख्या की सूचना तालिका संख्या 1 में दी गयी है।

तालिका संख्या – 1

क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	कुल जनसंख्या (वर्ष 2011 की जनगणनानुसार)	1830151
2	पुरूष संख्या	937905
	प्रतिशत	51.25
3	स्त्री संख्या	892233
	प्रतिशत	48.75
4	कुल साक्षर	822793
	प्रतिशत	55.58
5	पुरूष साक्षरता	554460
	प्रतिशत	71.83
6	स्त्री साक्षरता	288330
	प्रतिशत	38.73
7	कुल ग्रामीण संख्या	1678248
	पुरूष	858824
	स्त्री	819424
8	शहरी संख्या	151903
	पुरूष	79081
	स्त्री	72822

स्त्रोत – जनगणना 2011)

1.7 जलवायु एवं वर्षा :–

जिले का सम्पूर्ण भू–भाग उच्च तापक्रम, न्यून आर्द्रता तथा अल्प व अनियमितता वर्षा वाले क्षेत्र में गिना जाता है। जिले की जलवायु शुष्क है और अधिकांश भाग में रेगिस्तान फैला हुआ है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 43 सेमी. है तथा अधिकतम औसत तापमान 45 डी.सी. है जो कभी–कभी 48 डी.सी. तक भी पहुंच जाता है। न्यूनतम औसत तापमान 6.25 डी.सी. है जो कभी– कभी 0 डी.सी. तक भी हो जाता है। जिले में विगत वर्षों में हुई वर्षा का तहसीलवार विवरण तालिका संख्या 2 में दर्ज है।

तालिका संख्या – 2

तहसील	वर्षा मिली मीटर में		
	2014	2015	2016
Jalore	329	744	836
Ahore	432.6	390.6	670
Bhinmal	418	500	832
Jaswantpura	450	870	976
Raniwada	541	774	1435
Sanchore	380	865	989
Sayala	382	500	711
Bagora	342	342	654
Chitalwana	Nil	556.2	914
Total	3274.6	5541.8	8017
Average	409	616	891

(Source : Distt. Collector Jalore)

1.8 वन, वनस्पतियां जीव :–

इस जिले में वन एरिया में खेजली, बबूल, कूमट, नीम, केर, सरगुडा, जाल, गूदी, रोहिडा आदि के वृक्ष है। जसंवतपुरा में पहाड़ों में घने वृक्ष तथा मधु मक्खियां, भंवरे आदि के छत्ते से ग्रामीण लोग शहद निकालते है। जो कि प्राकृतिक ओषधि में खाने में काम आता है। जसंवतपुरा पहाड़ों में जीवों में रीछ, अधिक मात्रा में है। बहुत ही कम मात्रा में चीते, लोमड़ी, जरक आदि भी है। जालोर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 10640 वर्ग किलोमीटर है जिले की कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से 509.99 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र है जो जिले की

भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.79 प्रतिशत है ।जालोर जिले की वन क्षेत्र जी.टी. शीटस के अनुसार 24.39'' से 25.48'' उत्तरी अक्षांश 71.11'' व 73.6'' से पूर्वी देशान्तर की मध्य स्थित है। हातमताई बीड 979.10 हैक्टर एवं जुजाणी बीड 1645.07 हेक्टर तथा भवातडा बीड 1077.80 हेक्टर में ज्यूलीफलोरा का Biomas है लगभग 150 हेक्टर में जसवन्तपुरा में गुगल के पौधे एवं अन्य औषधीय पौधे उपलब्ध है ।

❖ संसाधन :–

2.1 मानव संसाधन :–

मानव संसाधन में इस जिले में शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में प्रगति पर है। वर्तमान में प्राईवेट सेक्टर में ग्राम बिशनगढ़ में महिला पोलोटेकनिक कॉलेज कार्यरत है, जिसमे विभिन्न प्रकार डिप्लोमा कोर्स कराये जाते है। एवं सायला में इलेक्ट्रिक बेज की आई.टी.आई. सेंटर है। भीनमाल, जालोर, सांचौर में बी.एड. कॉलोज प्रावईवेट सेक्टर में है। ऐसे कोर्स के पश्चात् इनको रोजगार स्थानीय स्तर पर कैसे मिल? यह समस्य अवश्य है , जो कि इस जिले में मध्यम तीन इकाईयां स्थापित (रानीवाडा दुग्ध सहकारी समिति रानीवाड़ा, श्री राम प्रा.लि. व ममता दुग्ध डेयरी उत्पादक सांचौर है तथां वृहद क्षेत्र के उद्योग स्थापित नहीं है।

2.3 पानी एवं सिचांई संसाधन :–

जिले के अधिकांश भाग में रेगिस्तान फैला हुआ है । जिले की औसत वर्षा 43 से.मी. है तथा अधिकतर तापमान 45 डी.सी. रहता है और यह कभी–कभी 48–49 तक पंहुच जाता है। जमीन में पानी की उपलब्धता बहुत गहरी है तथा यहां का पानी में फलोराईड अधिक है। इस पानी के सेवन करने से हड्डीयों व जोडों में दर्द रहता है तथा दांत पीले एवं घिस जाते है। वर्तमान में गुजरात राज्य से सांचौर में नर्मदा नहर का पानी आने से पीने के लिए भीनमाल, बागोड़ा, सायला, जालोर, आदि तक पानी लाने आ गया है। जिससे इस समस्या का निजात संभव हो गया है। । सिंचाई के प्रमुख साधन कुएं,नहर, तालाब, एवं टयूबवेल आदि उपलब्ध है। लेकिन यह वर्षा पर आधारित है। यहां पर वर्षा का एवरेज कम है। पीने के पानी

के लिए दिनांक 06.01.2016 को जालोर में नर्मदा नहर का मीठा पानी पहुंच गया है।

2.4 सिचांई की सुविधा :–

सिंचाई संसाधनों का विवरण :– जिले में वर्षा मानसून का जुआ हैं। इसलिए यहां पर वर्षा की कमी के कारण अधिकांशतः सिंचाई द्वारा कृषि कार्य किया जाता हैं। सिंचाई के प्रमुख साधन कुंए/नहर/तालाब एवं ट्यूबवेल आदि प्रमुख हैं। सिंचाई विभाग से प्राप्त सूचना अनुसार सिंचाई के संसाधनों का विवरण तालिका संख्या 3 में निम्न प्रकार से हैं :–

तालिका संख्या 3 (31 मार्च 2018)

क्र.सं.	कुए एवं ट्यूबवेल सं. मय सिंचित भूमि (हेक्टर में)	नहरो की सं. मय सिंचित भूमि (हेक्टर में)	अन्य संसाधन सं. मय सिंचित भूमि (हेक्टर में)
1	2	3	4
1	2,15,800 हेक्टर	24/41865 हेक्टर	–

❖ **शिक्षाः–**

2.5 कॉलोज एवं इन्सटीट्यूट :–

वर्तमान में जिले में 5 राजकीय महाविद्यालय, 07 निजी महाविद्यालय स्थापित है। शिक्षा की दृष्टि से जिला पिछडे जिलो में शुमार है। यहां की सांक्षरता दर 55.58 प्रतिशत कॉलेज एवं इन्सीटीट्यूट की स्थिति तालिका संख्या 4 में दर्शायी गयी है।

तालिका संख्या – 4

प्रकार	कॉलेजो की संख्या				
	मैनेजमेंट	इंजीनियरिंग	पॉलोटेक्निकल	आईटीआई	अन्य
राजकीय	–	–	–	3	4
निजी	1	–	1	2	7

2.6 मेडिकल इन्सीटीट्यूटः—

तालिका संख्या — 5

मेडीकल इन्सीटीट्यूट				
नर्सिंग ट्रेनिंग सेंटर	पैरामेडिकल ट्रेनिंग सेंटर	मेडिकल कॉलेज	हेल्थ सेंटर	हॉस्पीटल
1	—	—	430	79

जिले में स्वास्थ्य संस्थाएं :— जिले में 430 स्वा. केन्द्र संचालित हैं जिनमें जिला मुख्यालय पर सामान्य चिकित्सालय दो, सामुदायिक स्वा. केन्द्र 11, प्राथमिक स्वा. केन्द्र 69 एवं उप केन्द्र 394 संचालित हैं। जिले में ऐलौपेथिक, आयुर्वेदिक एवं होम्योपथिक चिकित्सा के लिए चिकित्सालय एवं संबंधित चिकित्सक उपलब्ध हैं। मुख्य चिकित्सा एवम् स्वास्थ्य अधिकारी जालोर से प्राप्त सूचना अनुसार जालोर जिले में ऐलोपेथिक स्वास्थ्य केन्द्र तालिका संख्या 6 में दर्शाये गये हैं।

तालिका संख्या — 6

जिले में स्वास्थ्य संस्थाओं की स्थिति

क्र.सं.	ब्लॉक	कुल स्वास्थ्य संस्थायें	प्रा.स्वा.केन्द्र	सामु.स्वा. केन्द्र	उपकेन्द्र
1	2	3	4	5	6
1	आहोर	59	10	1	50
2	रानीवाडा	50	9	2	43
3	भीनमाल	58	8	1	51
4	जसवंतपुरा	45	7	1	37
5	सांचौर	53	6	2	49
6	सायला	65	10	2	57
7	जालोर	75	10	1	67
8	चितलवाना	50	9	1	40
	योग	455	69	11	394

आयुर्वेदिक एवम् होम्योपेथिक संस्थायें :– जिला आयुर्वेद अधिकारी से प्राप्त सूचना अनुसार जिले में आयुर्वेदिक एवम् होम्योपेथिक चिकित्सालयों की प्रगति तालिका संख्या 7 में दर्शायी गयी हैं :–

तालिका संख्या – 7

क्र.स.	आयुर्वेदिक चिकित्सालय संख्या	होम्योपेथिक चिकित्सालय संख्या
1	अ श्रेणी–2, ब श्रेणी–68 कुल 70	4

❖ कर्षि

फसलों के प्रमुख उत्पादन के क्षेत्र :–

कृषि उत्पादन का विवरण :– जालोर जिले में कृषि एवं संबंधित क्षेत्र में जिले की 75 प्रतिशत जनसंख्या जीवनयापन करती हैं। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1056600 हैक्टर हैं जिसमे से कृषि योग्य भूमि 862776 हैक्टर हैं। इसमें से सिंचित क्षेत्र 347900 हैक्टर हैं। जो कि कुल कृषि योग्य भूमि का 40.32 प्रतिशत हैं। शेष भूमि में वर्षा आधारित खेती की जाती हैं। जिले में खरीफ में औसतन 6 लाख हेक्टर में एवं रबी में पानी की उपलब्धता के अनुसार 3.20 लाख हेक्टर में फसले बोई जाती हैं। खरीफ में मुख्यतः बाजरा, ग्वार, मूंग, मोठ, अरण्डी, मूगफली तथा रबी में सरसों, गेहूं, जीरा, ईसबगोल,चना आदि की फसले बोई जाती हैं।

उपनिदेशक कृषि विभाग से प्राप्त सूचना अनुसार यहां की मुख्य फसले एवं उत्पादन का विवरण तालिका संख्या 8 में दर्शाया गया हैं :–

मुख्य फसलें एवं उत्पादन (रबी व खरीफ)

तालिका संख्या – 8

क्र.सं.	नाम फसल	बुवाई क्षेत्र (हेक्टर)	उत्पादन (MT)
1	2	3	4
1	गेंहू	47000	99000
2	सरसों	83000	105000
3	चना	27000	32000
4	मोंठ	15587	2961
5	जीरा	71000	53600
6	ईसबगोल	56000	40000
7	ग्वार	55000	16000

8	बाजरा	302000	89000
9	मूंग	133000	37000
10	मूंगफली	19000	27000
11	अरण्डी	30000	53000
12	तिल	11000	2000

(स्त्रोत : कृषि विभाग)

3.1 मुख्य फसलें

जिले की रबी की फसलें में गेंहू जो चना राई सरसों तारामीरा अरडी इसबगोल उत्पादित होते है। खरीफ की मुख्य फसलें ज्वार, बाजरा, मौठ, मूंग, चवला, तिल, अरडी, मिर्च है। रायडा, जीरा व इसबगोल का उत्पादन यहां रिकार्ड मात्रा में किया जाता है।

3.2,3, दलहन /तिलहन तथा प्रमुख औषधीय फसले–

जिले में आहोर तहसील क्षेत्र में मूंग तथा सांचौर,रानीवाडा,सायला क्षेत्र में मुख्यतया तिलहनी फसलीों अन्तर्गत अरन्डी,सरसों तथा औषधीय फसलों अन्तर्गत जीरा व इसबगोल की खेती होती है । अरन्डी के तेल का उपयोग व्यापारिक एवं औषधीय महत्व सरसों का उपयोग प्रमुख खाद्य तेल तथा जीरा का उपयोग मसाला हेतु किया जाता है । इसबगोल की भूसी का औषधीय महत्व है ।

3.4 फुलों की खेती/फलोरी क्लचर

उद्यानिकी :– जालोर जिले में मुख्यतः उद्यानिकी फसलें जीरा, टमाटर, ईसबगोल है तथा इसके अतिरिक्त निम्नानुसार उद्यानिकी फसलों की बुवाई की जाती है। उत्पादन तालिका संख्या 9 में दी गई है ।

मुख्य उद्यानिकी फसलें एवं उत्पादन (रबी व खरीफ)

तालिका संख्या – 9

Sr. NO.	Crop Nmae	Achievment Area(ha)	Production(MT)
1	2	3	4
1	Tomato	383	1783
2	Brinal	80	7094
3	Carrot	20	28

4	Radish	20	227
5	Onion	412	4052
6	Cole Crops	70	754
7	Pea	10	46
8	Potato	200	3620
9	Spinach	15	110
10	Sweet Potato	100	1310
11	Okara	30	167
12	Other Rabi Veg.	60	270
	Total Rabi Vegetable	1760	19461
13	coriander		
14	cumin	63860	63860
15	fenugreek	90	90
16	garlic	10	10
17	ajwain	50	50
18	fennel	0	0
	total rabi spices	64010	64010
19	isabgoal	42340	42340
20	suwa	0	0
	total rabi medicinal crop	42340	42340
	grand total	107750	127211

3 (स्त्रोत : उद्यान विभाग)

❖ पशुधन :–

4.1 पशु सम्पदा :– कार्यालय उपनिदेशक पशुपालन विभाग जालोर से प्राप्त सूचना अनुसार जिले में विभिन्न प्रकार के पशुओं की उपलब्धता तालिका संख्या 10 में दर्शायी गयी हैं :–

तालिका संख्या – 10

पशु धन का विवरण

क्र.सं.	पशुधन का नाम	संख्या
1	CATTLE	295839
2	CROSS BREAD	2248
3	INDEGENIOUS	293591
	BUFFLOES	469162
4	SHEEP	385416
5	GOATS	469640
6	HOURSE & PONIES	1920
7	MULES	7
8	MONKEYS	3334
9	CAMESL	5114
10	PIGS	743
11	TOTAL	**1927014**
12	RABBIT	242
13	DOGS	14585

(स्त्रोत : पशुपालन विभाग)

4.1.1, 2 पशु सेंटर/चिकित्सा सुविधा :–

जिले में उप निदेशक स्तर का पशु चिकित्सा कार्यालय स्थापित है। जिसके के अन्तर्गत जिला स्तर पर/ब्लॉक स्तर पर एवं प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र में पशुधन को बेहतर चिकित्सा उपलब्ध है।

तालिका संख्या 11

क्र.स.	संस्थाओं का विवरण	स्वीकृत संख्या
1	कार्यालय संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग जालोर	1
2	उप निदेशक, बहु उद्वेशीय, पशु चिकित्सालय, जालोर	1
3	प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय	19
4	पशु चिकित्सालय	37
5	पशु औषधालय	6
6	पशु चिकित्सा उपकेन्द्र	152

7	जिला रोग निदान प्रयोगशाला	1
8	जिला स्तरीय मोबाईल यूनिट	3
	योग :–	**220**

❖ पशुपालन के उत्पाद

5.1 डेयरी उत्पादों की उपलब्धता

जिले में रानीवाड़ा में जालोर–सिरोही दुग्ध उत्पादन प्रा.लि. डेयरी करीब 30 वर्षो से कार्यरत है एवं ममता दुग्ध डेयरी उद्योग सांचौर जिसमें कुल पुंजी विनियोजन राशि 15.99 करोड़ है जो कि मध्यम उद्योग की श्रेणी में आता है। तथा इसमें दुग्ध पाउडर , घी, बटर, का उत्पादन कार्य होता है। इसके अलावा भी जिले में सूक्ष्म आधारित छोटी–छोटी दुग्ध बेचने की डेयरियां है। जिले में वर्षा की कमी से तथा कुओं में वाटर लेवल कम होने से दुग्ध आधारित पशुधन कम हो रहा है। जिससे यह डेयरी उद्योग भी कच्चा माल की कम उपलब्धता के कारण संघर्षरत है।

5.2 उन की उपलब्धताः–

इस जिले में भेड़ व उंट की उपलब्धता कम है । अतः स्थानीय ग्राम भवरानी में कुम्हारी जाति के लोग उनी पटटू, पांयदान आदि बनाकर अपना गुजारा करते है। इसी प्रकार ग्राम लालपुरा तहसील सांचौर में भी उनी पटटू, भांकल आदि बुनकर लोग बनाते है। ये सभी गरीब लोग है जो कि अपने निवास पर हाथ से या पुराने ओजारों से उपरोक्त उत्पादन बनाकर अपनी जीविका चलाते हे।

5.3 मांस/खाना की उपलब्धता

जिले में शहरी एवं ब्लॉक क्षेत्र में मांस की दुकाने है। समाज में शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनो ही लोग है इन दुकानो पर मांस खाने वाले को आसानी से उपलब्ध हो जाता है।

5.4 चमड़े की उपलब्धता

जिले में लोग पशुधन में गाय, भेड़, बकरियां, उंट आदि पालते है। ये बीमार होने पर मरते है तो इनकी खालें (चमड़ा) व्यवसाय में काम आता

है। जिससे चमड़े की विभिन्न प्रकार के आर्टिजनों द्वारा उत्पाद तैयार किये जाते है। रंगाई का कार्य भी इस जिले में लोग करते हे।

5.5 हड्डीयां

इस जिले में वन क्षेत्रों में रीछ, चीता, लोमडीया तथा जमीन क्षेत्रों मे गाय, भेस, भेड, बकरी, घोड़े, गधे, उंट, सुअर है इनकी मृत्यु मवेशी मालिक इनकी हडडीयों स्थानीय हडडीयों के ठेकेदार इसके मांग के अनुसार बाहर बचते है। स्थानीय तौर पर ऐसा कोई प्रोजेक्ट स्थापित नही है, जिसमें कि इन हड्डीयों का उपयोग हो सकें।

❖ भूविज्ञान एवं खनिज : –

6.1,2 खानों/खनिज सम्पदा :– खनिज सम्पदा की दृष्टि से यह जिला पिछडा हुआ है। ग्रेनाईट, फलोस्पार व जिप्सम के अलावा अन्य कोई खनिज प्रमुखतया उपलब्ध नही है। पिंक किस्म का ग्रेनाईट जालोर कस्बे के पास केशवना, सियाणा व अन्य स्थानों पर उपलब्ध है। फलोस्पार की चट्टान करारा क्षेत्र में है। ग्रेनाईट ने जिले को प्रदेश के खनिज उत्पादन करने वाले जिलो में दर्शाया है। फलोस्पार स्टील व अन्य उद्योगों में काम करने वाला महत्वपूर्ण खनिज है।

जिले में उत्पादित ग्रेनाईट, स्लेब व टाईल्स जालोर सें ताईवान, चीन नाईजीरिया, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, रूस, संयुक्त राज्य अमेंरिका, मिश्र, कनाडा, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, इटली, इण्डोनेशिया, जापान आदि देशो को कांडला बन्दगाह (गुजरात) से निर्यात किया जाता है। जिले में कुल खाने 458 है, जिनमें प्रधान खनिज की 3 व अप्रधान खनिजों की संख्या 455 है। जिलों में खनिजवार उत्पादन एवम् आय का विवरण तालिका संख्या 12 में निम्न प्रकार हैं–

खनिजवार उत्पादन एवं आय

तालिका संख्या – 12

क्र.सं.	खनिज	उत्पादन मात्रा (टनों में)	आय (लाखों में)
1	मैसेनरी स्टोन	976108	141.33
2	ग्रेनाईट	1270650	547.60
3	बजरी	12828659	1221.48

4	जेस्पार	980	6.25
5.	जिपसम	.	1.78
6.	रोयलेट	55725	1ण्38

(स्त्रोत : खनिज विभाग)

❖ वन संसाधन :–

7.1, 2 वन सम्पदा :– जिले में कुल वन क्षेत्र 50998.86 हैक्टर है, जिसमें 12612.60 हेक्टर आरक्षित वन क्षेत्र, 29997.00हेक्टर संरक्षित वन क्षेत्र तथा 8389. 26 हेक्टर अवर्गीकृत वन क्षेत्र है। जिले में पाये जाने वाले वृक्षों में मुख्यतया जाल, रोहिडा, खेजडी, बबूल, कुमट, नीम, केर आदि है। जसवंतपुरा वन क्षेत्र में औषधियों वाले पौधे भी उपलब्ध है। वन विभाग से प्राप्त सूचना अनुसार जिले में वनों की स्थिति तालिका संख्या 13 में निम्न प्रकार से हैं :–

तालिका संख्या – 13

आरक्षित वन (हेक्टर में)	संरक्षित वन (हेक्टर में)	अवर्गीकृत वन (हेक्टर में)	कुल वन क्षैत्र (हेक्टर में)
1	2	3	4
12612.60	29997.00	8389.26	50998.86

❖ पर्यटन :–

8.1 जिले में पर्यटन से संबंधित सूचना :– जालोर जिला पर्यटन की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है जिले के प्रमुख पर्यटक स्थल तालिका 14 में दर्शायी जा रही है।

तालिका संख्या – 14

क्र.सं.	पर्यटन स्थल	अविस्थिति
1	स्वर्ग गिरी दुर्ग	जालोर शहर
2	दादावाड़ी	भांडवाजी
3	सुंधा माता मंदिर	जसवंतपुरा
4	72 जिनआलय मंदिर	भीनमाल
5	आशापुरी मंदिर	मोदरान, भीनमाल
6	सिरे मंदिर	जालोर शहर
7	वाराह मंदिर	भीनमाल
8	नंदीश्वर तीर्थ	जालोर शहर

9	संस्कृत पाठशाला /तोपखाना	जालोर शहर
10	जहाज मंदिर	माण्डवला, सायला

स्त्रोतः डिस्ट्रीक्ट वेब साईट

❖ मौजूदा संरचनात्मक सुविधा :–

9.1, 2,3,4 बिजली संसाधन

जिले में विद्युतीकरण का विवरण :– अधीक्षण अभियन्ता जोधपुर विद्युत वितरण निगम जालोर से प्राप्त सूचना अनुसार जिले में विद्युतीकरण की स्थिति तालिका संख्या 15 के अनुसार निम्न प्रकार से हैं :–

तालिका संख्या – 15

कुल विद्युतीकरण ग्राम सं.	कुल घरेलु कनेक्शन सं.	कुल अघरेलू कनेक्शन (वाणिज्यिक)	कुल औद्योगिक कनेक्शन	11KVA/33KVA /220/400 GSS की सं.	Electricity Consumption pattern
1	2	3	4	5	6
645	229513	17691	1916 Mip 982 h.t. 82	132 KV (ind.) - 01 11 KVA - 435 GSS%& 400 KVA- 01 132 KVA- 18 33/11 KVA - 255	Domestic : 1494.09 LU Commercial : 557.16 LU Industrial : 2285.32 LU PSL : 25.77 LU PHED : 522.15 LU Irriagation : 12740.06 lu Others : 25.36 LU **TOTAL : 17649.91 LU**

3 **स्त्रोत – विद्युत विभाग**

❖ परिवहन :–

10.1 सड़कों का विवरण :– जिले मे अधिकांश पक्की सडकों से अन्य जिलो को जोडा गया है। जिला रेल एवं बस सेवा से जुडा हुआ हैं। जिले मे एक राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 15 है जिसकी लम्बाई 38.10 किमी हैं तथा 5 राज्य मार्ग हैं। (SH-11,16,31,38 व 64 हैं जिसकी लम्बाई क्रमशः 17 किमी,41 किमी, 107 किमी,17.5 किमी,36 किमी) हैं जिले में कुल 3323.90 किमी लम्बाई की सड़कों का डामरीकरण किया हुआ हैं। अधीक्षण अभियन्ता

सार्वजनिक निर्माण विभाग, वृत्त, जालोर से प्राप्त सूचना अनुसार जिले में सडकों का विवरण तालिका संख्या 16 में निम्न प्रकार से हैं :–

जिले में सडको का विवरण 31 मार्च 2018

तालिका संख्या – 16

क्र. सं.	जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग मय न. व लम्बाई	जिले में राज्य राजमार्ग मय सं. एवं लम्बाई	कुल डामरीकृत सडकों की लम्बाई	धात्विक सडकों की लम्बाई	कंकरीटएवं सीमेन्टेड रोड की लम्बाई	कच्चे रास्तों की लम्बाइ	ग्रेवल
1	2	3	4	5	6	7	8
1	NH-15 Length 38.10Km	538.38 km	4967.47Km	9.35 Km	1.9 Km	13.70km	66.72

स्त्रोत – सार्वजनिक निर्माणविभाग

सड़क परिवहन

जिले में परिवहन संसाधनों का विवरण :– जिले में कुल पंजीकृत विभिन्न प्रकार के वाहनों की संख्या परिवहन विभाग की सूचना अनुसार तालिका संख्या 17 में प्रदर्शित हैं :–

तालिका संख्या – 17

जिले में परिवहन संसाधनों का विवरण

बस	ट्रक	जीप	कार	थ्री व्हीलर	टू व्हीलर	अन्य	योग
850	4345	6384	3740	3340	70897	17673	107229

(स्त्रोत : परिवहन विभाग)

सड़क पर वाहन

जालोर में सड़कों पर वाहन में यात्री बसें, ग्रेनाईट उत्पादन लदान की बड़े–बड़े ट्रोले, ट्रकें, जीप, कार, थ्री व्हीलर, टू व्हीलर, एवं अन्य वाहन के साधन है जो दिन–रात सड़को पर चलते है। जालोर में 1400–1500 ग्रेनाईट स्लेब बनाने वाली सूक्ष्म एवं लघु उद्योग इकाईयां कार्यरत है। जालोर शहर

ग्रेनाईट स्लेब उत्पादन में ऐशिया का सबसे बड़ा हब है। साथ में कच्चे माल में स्थानीय तौर पर करीब 150 ग्रेनाईट माईन्स है इस प्रकार एक इकाई में 10 वाहन तथा एक माईन्स में 3 भारी वाहन की गणना करें तो जालोर में सड़कों पर वाहन आस–पास के छोटे जिलों से कई गुना ज्यादा है।

10.2 रेल परिवहन

जालोर में रेलवे की एक ही लाईन जो कि जोधपुर से गुजरात में भीलड़ी रेलवें जंक्शन को मिलती है। यह ब्रड–गेज है। तथा यात्राी रेलगाड़ी का आवागमन कम है। अधिकतर इस रेलवे ट्रेक पर मालगाडियां चलती रहती है। जो कि कोयले का लदान करती है।

❖ बैंकिग सुविधा

11.1 जिले में बैकों का विवरण :– जिले में एस.बी.आई. अग्रणी बैक है जो कि जिले की समस्त बैको की मोनिटरिग करता है। अग्रणी बैक अधिकारी से प्राप्त सूचनानुसार बैको का विवरण तालिका संख्या 19 में दर्शाया गया हैं :–

11.2 वित्त की कूल बैंक

तालिका संख्या – 19

क्र. सं.	बैक का नाम	बैको की संख्या
01	स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एवं जयपुर	24
02	भारतीय स्टेट बैक	06
03	बैक ऑफ इण्डिया	05
04	पंजाब नेशनल बैक	04
05	राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैक	54
06	सेन्ट्रल कोपरेटिव बैक लि.	12
07	भूमि विकास बैक प्राथमिक सहकारी	05
08	बैक ऑफ बडौदा	05
9	सेन्ट्ल बैक ऑफ इण्डिया	01
10	यूनियन बैक ऑफ इण्डिया	03
11	आई सी आई सी आई	07
12	आईडीबीआई बैंक लि.	02
13	सिण्डिकेट बैंक	01
14	एक्सिस बैंक लि.	01
15	ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स	02

16	एसडीएफसी	03
17	केनरा बैंक	01
18	कोरपो बैंक	01
19	यूको बैक	02
20	यस बैक	02
21	इंडुसिंड बैंक लि.	02
22	कोटक महिन्द्र बैंक लि.	01
23	आन्ध्रा बैंक	01
कुल योग		**145**

स्त्रोत : मार्गदर्शी बैंक

11.3 अन्य संस्थागत नेटवर्क

डीआईसी एवं अन्य संबंधित संस्था

प्रत्येक जिले की भांति जालोर में भी जिला उद्योग केन्द्र स्थापित है। इसके अलावा डी.आई.सी से संबंधित संस्थाओं में राजस्थान वित्त निगम का सुविधा केन्द्र, रीको कार्यालय, राजस्थान कौशल विकास आजीविका विकास निगम, राज. ग्रामीण कौशल, आरसेटी, राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड (वर्तमान में जोधपुर में कार्यरत) समस्त प्रकार को कामर्शियल बैंक, कॉपरेटिव एवं अन्य बैंकस स्थापित है। डी.आई.सी. का इनसे तालमेल अच्छा है।

❖ औद्योगिक क्षेत्र

12.1,2 जिले में स्थापित औद्योगिक क्षेत्रों का विवरण

तालिका संख्या – 20

क्र.सं.	**औद्योगिक क्षेत्र का नाम**	**स्थापित भूखण्डों की संख्या**
1	जालोर प्रथम चरण	103
2	जालोर द्वितीय चरण	70
3	जालोर तृतीय चरण	272
4	बिशनगढ	68
5	भीनमाल	46
6	सांचौर	98
	कुल	**657**

स्त्रोत रीको लि. जालोर

❖ मौजूदा औद्योगिक परिदृष्य :–

13.1 मौजूदा औद्योगिक परिदृष्य : मुख्यतः ग्रनाईट आधारित औद्योगिक इकाईयां रीको जालोर शहर के प्रथम/द्वितीय एवं तृतीय चरण में तथा बिशनगढ़ स्थापित है। भीनमाल औद्योगिक क्षेत्र में खाद्य उत्पाद, पी.वी.सी पाईप, एवं सीमेंट की ईंट/ ब्लॉक की इकाईयां स्थापित है। औद्योगिक क्षेत्र सांचैार में स्टील पाईप, टयूब, एलबो एव प्लास्टर ऑफ पेरिस एवं विविध तरह के सुक्ष्म/लघु उद्योग स्थापित है। सांचौर एवं चितलवाना में औद्योगिक क्षेत्र और संयुक्त इकाईया जैस डेयरी उत्पादन, लोहा और स्टील कार्य आदि स्थापित है। जालोर के ग्रेनाईट एवं उद्योग के क्षेत्र को देखते हुऐ जालोर नगर परिषद् क्षेत्र में एक और औद्योगिक क्षेत्र खोला जाने का प्रस्ताव सक्षम अधिकारियों को प्रस्तुत किया जा चुका है।

तालिका सं. – 21

जिले में स्थापित मध्यम उधोग

क्र. सं.	उधोग का नाम –पता	उत्पादन का नाम	कार्यरत श्रमिक	पूं. वि.
1	जालोर सिरोही दुग्ध उत्पादन प्रा. लि. (डेयरी) रानीवाडा	दुग्ध, पाउडर, घी, बटर	80	9.20 करोड़
2	श्रीराम ग्रेनाइट्स बिशनगढ रोड जालोर	ग्रेनाइट स्लेब एवं टाईल्स	35	10.99 करोड़
3	ममता दुग्ध डेयरी सांचौर	दुग्ध, पाउडर, घी, बटर	40	5.55 करोड़

जिले में स्थापित सूक्ष्म एवं लघु उधोग

तालिका संख्या – 22 *(वर्ष 2017–18 तक)*

क्र.सं.	आधार	संख्या
1	खनिज आधारित उधोग	931
2	कृषि आधारित उधोग	346
3	इंजि एवं लौह आधारित	650
4	वन आधारित	682
5	चर्म आधारित	2002
6	हाथकर्घा आधारित	297
7	विविध	1288
	कुल योग	6196

स्त्रोत जि.उ.के जालोर

13.2 मौजूदा औद्योगिक स्थिति जालोर में अधिकतर इकाईयां उत्पादनरत है

13.3 उत्पादन की निर्यात क्षमता :– जालोर में ग्रेनाईट स्लेब एवं टाईल्स उत्पाद का अन्य देशों में निर्यात होता है।

❖ संभावित उद्योग और अन्य महत्वपूर्ण कारक :–

14.2 साधन

जालोर में ग्रेनाईट स्टोन के प्रोसेसिंग से ग्रेनाइट स्लेब एवं टाईल्स उत्पादन आधारित करीब 1400–1500 इकाईयां कार्यरत है। जिससे प्रतिदिन 8,60,000 वर्ग फिट का रोजाना उत्पादन होता है तथा रोजाना 2600 टन माल बाहर जाता है। इस उद्योग के फलीभूत होने के पिछे इस उद्योग का चलाने के लिए कच्चा माल ग्रेनाईट खाने 500 के करीब है तथा समीप जिलो यथा सिरोही, पाली, बाडमेर में भी ये ग्रेनाईट खनन की खाने है। इस उद्योग से सरकार की राजस्व अच्छी होती है।

सांचौर में नर्मदा का पानी का उपयोग कृर्षि क्षेत्र में किया जा रहा है। जिससे यहां अनार, प्याज, घोड़ा जीरा, आलू, टमाटर आदि की पैदावार प्रचूर मात्रा में हो रही है। अतः यहां फूड प्रोसेसिंग आधारित उद्योग लगने की खूब संभावना है । राज्य सरकार द्वारा फूड प्रोसेसिंग पार्क विकसित किया जावे तो यहां के लोग तथा बाहर से अपना निवेश करने की प्रबल संभावना है।

14.3 बुनियादी ढांचा

वैसे जालोर राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है यहां पर सड़क, पानी, रेल, साधन का अभी भी अभाव है। सड़के नेशनल हाईवे से जुड़ी हुई नही है। साचौर में अवश्य ही नेशनल हाईवे एनएच–15 है जो कि गुजरात राज्य एवं बाडमेर जिले को जोड़ता है।वर्तमान में बालोतरा से साण्डेराव तक नेशलन हाईवे 325 का कार्य प्रगति पर है वह एक वर्ष तक पूर्ण होने की सम्भवना है साथ ही बाडमेर से सायला होते हुए बिशनगढ तक का स्टेट हाईवे 16 का निमार्ण का कार्य चल रहा है । रेल लाईन है लेकिन दूरस्थ पेसेन्जर रेल साधन नही है। इसी प्रकार बारिश की कमी से वाटर लेवल भी जमीन में बहुत डीप है। पीने का

पानी में फलोराईड कि अधिकता के कारण, ऐसे पानी के सेवन करने से लोगों की हड्डीयों कमजोर हो जाती है। पाचन तंत्र भी कमजोर होता है। कई गावों में 25–30 उम्र में ही लोग हड्डीयों की कमजोरी के कारण कूबड़े हो जाते है। राज्य सरकार द्वारा नर्मदा का पानी पीने के लिए प्राप्त होने लगा है इससे इस समस्या का निवारण होरहा है ।

14.5 संभावित उद्योग/कृषि आधारित

1. खनिज आधारित उधोग :– जालोर जिला राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है और इस भाग में अरावली मालाओं का जाल फैला हुआ हैं। विभिन्न प्रकार के पहाड होने से पत्थरों/ब्लॉक्स की विविधता है जिससे कई रंगों में पत्थरों का खनन कार्य किया जाता हैं। वर्तमान में जालोर जिला ग्रेनाईट नगरी के नाम से जाना–जाने लगा हैं। जिला मुख्यालय पर तीन औद्योगिक क्षेत्र घोषित है जिले में लगभग 1400–1500 ग्रेनाईट इकाईया स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त जिला मुख्यालय पर चतुर्थ चरण औद्योगिक क्षेत्र नहीं होने से जमीन के लिए होड़ लगी हुई है तथा बाहर से आने वाले उद्यमी जालोर मुख्यालय से 10–15 किमी की दूरी तक जमीन लेकर यहां ग्रेनाईट के प्रोजेक्ट लगा रहे हैं।

2. कृषि आधारित उधोग :– यह जिला एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहां पर विभिन्न साधनों से सिंचाई द्वारा भी कृषि कार्य किया जाता हैं। खरीफ की फसल अधिकांशतया मौसमी वर्षा पर निर्भर हैं। अच्छी वर्षा होने पर बाजरा, मूंग, मौठ, ग्वार, तिल, मतीरा, मूंगफली आदि की फसल अच्छी तादाद् में होती हैं।

जिले में नर्मदा नहर के जल से सिंचाई सुविधा प्राप्त होने से खाद्य आधारित उद्योगों के विकसित होने की विपुल संभवनाएं है। जिनमें पपीता, अनार, आलू, दाल मिल, मसाला एवं अनाज पिसाई, पशुआहार, ग्वारगम, मूंगफली, ईसबगोल, टमाटर केचअप, तेलमिल आदि खाद्य पदार्थ आधरित उधोग विकसित हो सकते है।

3. इंजिनियरिंग एवं लौह आधारित उधोग :– जिले के अन्दर विभिन्न प्रकार की मशीनरी बनाने का कार्य भी होता हैं। यहां ग्रेनाईट टाईल्स बनाने की मशीने बनाई जाती है। इसके अलावा यहां पर इंजिनियरिंग, मोटररिवाईडिंग, ब्रेजिंग, आयरन एवं स्टील फर्नीचर्स, अलमारी, कोटी, मजू, कृषि उपकरण, ट्रेक्टर ट्रोली आदि बनाने का कार्य होता हैं। सांचौर क्षेत्र में स्टील के पाईप बनाने के लघु उद्योग कार्यरत है। तथा 50–60 स्टील के एलबो, स्टील फर्नीचर आदि बनाने सूक्ष्म उद्योग है।

4. वन आधारित उधोग :– वनों में मुख्यतः बबूल, खेजडी, किकर, नीम, रोयडा आदि मिलते हैं। वन आधारित उधोगों में लकडी के फर्नीचर, खिलौने, हेण्डीक्राफ्ट्स, आदि बनाए जाते हैं।

5. चर्म आधारित उधोग :– जिले में अधिकांशतः जीनगर एवं जटिया जाति के लोगों द्वारा चर्म से संबंधित कशीदा, रंगाई एवं जूती बनाने का कार्य पैतृक रूप से किया जाता

हैं। राज्य सरकार द्वारा इस उधोग को बढावा देने के लिए कलस्टर विकास कार्यक्रम भी भीनमाल में किया गया हैं।

6. <u>हाथकरघा उधोग</u> :– जिले में हाथकरघा उद्योग ग्राम लेटा, जैलातरा, डीगांव, पुर, वोढा, वासनदेवडा, गुन्दाऊ, खारा, लालपुरा आदि स्थानों पर हैं। वर्तमान में लेटा बुनकर कार्य की दृष्टि से अग्रणी है क्योंकि यहां वर्किंग सेड के अलावा बुनकरों को कई बार नई–नई तकनीकी के प्रशिक्षण दिये गये हैं। बुनकर बस्ती का विद्युतीकरण कर सडकें बनवाई गई है तथा माल के क्रय–विक्रय हेतु समिति स्थापित की गई हैं।

7. **<u>अन्य प्रकार के उद्योग</u>** :– जिले में विभिन्न जातियों एवं व्यवसायों द्वारा पैतृक एवं दस्तकारी उधोगों में भी कार्य किया जाता हैं। इसमें मिट्टी के बर्तन बनाना, लकडी के कलात्मक आईटम, लुहारी कार्य तथा विभिन्न प्रकार के सर्विसिंग रिपेयरिंग आदि का कार्य होता हैं। घरों में महिलाओं द्वारा पापड, मंगोडी तथा सिलाई कशीदाकारी भी किया जाता हैं। इस प्रकार के उधोगों की संख्या लगभग 887 हैं।

इस प्रकार इस जिले में पिछड़ा होने के बावजूद खनिज एवं कच्चे माल की उपलब्धता, कुशल श्रमिकों की घनी जनसंख्या के कारण विभिन्न प्रकार के उधोगों के लगने की अच्छी संभावना हैं। वर्ष के दौरान जीरा, इसबगोल, टमाटर, रायडा, सरसों, अरण्डी एवं खनिज आधारित लगभग 65–70 छोटे बडें उद्योग के फलने–फूलने की पूर्ण संभावनाएं हैं। तथा उसमे लगभग 20–25 करोड के पूंजी विनियोजन की सम्भावना रहेगी।

<u>14.6 औद्योगिक क्षेत्र की प्रस्तावित वृद्धि</u>

वर्तमान में रीको द्वारा जालोर शहर में तीन क्षेत्र यथा प्रथम,द्वितीय,तृतीय क्षेत्र ग्राम बिशनगढ़ में प्रथम व द्वितीय क्षेत्र भीनमाल शहर में एक औ.द्यो. क्षेत्र तथा सांचौर शहर में एक औ.क्षे. स्थापित है। जिसमें रीको के पास कोई भूखण्ड खाली नहीं है। भावी औद्यो. क्षे. में जालोर शहर में चतुर्थ औ.क्षे. की मांग लंबे समय से की जा रही है। तथा इसके लिए भूमि के प्रस्ताव भी रीको द्वारा उच्चाधिकारियों को भिजवाये गये है। इसी प्रकार सांचौर के पास भी भूमि का चयन किया जाकर रीको द्वारा प्रस्ताव उच्चाधिकारियों को भिजवाया जा चुका है। आहोर जो कि जोधपुर–जालोर स्टेट हाईवे पर स्थित है। तहसील मुख्यालय है यहां के अधिकतर लोग दक्षिण में व्यापार/उद्योग में विनियोजक है। यहां रीको द्वारा औ.द्यो. क्षेत्र विकसित किया जावें तो ग्रेनाईट खनन की प्रचुर उपलब्धता को देखते हुए यहां ग्रेनाईट स्लेब, स्टील आधारित उद्योग, मार्बल, उद्योग एवं चने की दाल आधारित उद्योग लगने की प्रबल संभावना है ।

14.7 कारीगर उन्नयन के लिए सुझाव/रणनिती

जिले में चमड़े की जूतियां बनाने वाले करीब 1000 हस्तशिल्पी यथा जालोर शहर, माण्डवला, उम्मेदाबाद, बागोड़ा, भीनमाल शहर, बड़गांव, रानीवाड़ा, सांचौर शहर आदि में अपने–अपने घरों में काम करते है। इस उद्योगों की ओर परिष्कृत/आधुनिकीकरण के लिए वर्ष 2008 में गैर सरकारी संस्था के माध्यम से कलस्टर डवलपमेंट के तहत भीनमाल शहर में इन्हें बाहर से प्रशिक्षित लोगों द्वारा ट्रेन्ड किया गया है। अभी कॉमन फैसेलिटी सेंटर का निमार्ण कार्य बाकी है। इसी प्रकार जोधपुर, फूट वियर डिजाईन डवलपमेंट इन्स्टीटयूट की तरह जालोर में भी यह इन्स्टीयूट भीनमाल में भारत सरकार के वाणिज्यिक एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा खोला जाये तो यहां के 1000 चर्म जूती दस्तकारों को फूट वियर टेक्नोलोजी एवं मैनेजमेंट का द्विवर्षीय डिप्लोमा, लेदर शूज एवं एसेसरीज में 2 वर्षीय डिप्लोमा, फूट वियर मैन्युफैक्सरिंग टेक्नोलॉजी का 6 माह का प्रशिक्षण इन दस्तकारों के पढ़े लिखे बच्चों को एवं अन्य जाति के बेरोजगार युवक/युवतियों ऐसा कोर्स हासिल कर अपना व्यवसाय स्थापित करके आर्थिक स्वावलबंन बन सकते है।

14.8 जिले से निर्यात :–

जिले में निर्यातक इकाईयों की संख्या

तालिका संख्या – 23

क्र. सं.	इकाई का नाम पता	उत्पादन	वर्ष 2013–14 में किया गया निर्यात	देश जिनमें निर्यात किया गया।
1	फतेह ग्रेनाईट प्रा. लि.एफ88 रीको औद्योगिक क्षेत्र जालोर	ग्रेनाईट स्लेब एवं ब्लॉक	22.35 लाख	चीन,ताईवान,तुर्की, रूस, अमेरिका
2	श्रीराम ग्रेनाईट बिशनगढ रोड जालोर	ग्रेनाईट स्लेब एवं टाईल्स	15.31 लाख	अमेरिका,मलेशिया, रूस, अरब
3	महादेव स्टोन प्रा. लि. जी132 औद्योगिक क्षेत्र III जालोर	ग्रेनाईट स्लेब एवं टाईल्स	105.00 लाख	अरब, कनाडा

स्त्रोत : ग्रेनाईट इकाईयॉ, जालोर

14.9 सुझाव

जिला उद्योग केन्द्र में मेरे स्वंय के अलावा कोई अधिकारी/निरीक्षक नहीं है। अतः फिल्ड कार्य अनुभवी मंत्रालायिक कर्मचारियों से करवाया जा रहा है। अतः दो जिला उद्योग अधिकारी, दो उद्योग प्रसार अधिकारी एवं एक उप निदेशक, तीन च.श्रे. कर्मचारी के रिक्त पद भरने का कष्ट करावें।

सांचौर क्षेत्र जालोर से 150 कि.मी. एवं उनके क्षेत्र में आने वाले गावं 60–70 कि. मी. इर्द गिद है। इसी प्रकार चितलवाना तहसील भी सांचौर 40–50 कि.मी. बाडमरे जिले के पास है। अतः यहां के बेरोगार युवक/युवतियों एवं उद्योग पतियों को जालोर में कार्य के लिए आने–जाने में समस्या के देखते हुए, यदि डी.आई.सी. ग्रोथ सेन्टर सांचौर या रानीवाड़ा में स्थापित हो तो औद्योगिक विकास में और गति मिलेगी तथा इन क्षेत्र के लोगों को भी उद्योग संबंधित जानकारी आसानी से उपलब्ध होगी।

जालोर शहर, सांचौर शहर एवं आहोर में रीको द्वारा औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना का कार्य जल्द से जल्द हो तो इस जिले को औद्योगिक वातावरण के नये आयाम देने में चार चांद लगेंगें।

❖ हेण्डलमू :–

15.1 हाथकरघा का कार्य क्षेत्र :– जालोर जिले में अलग अलग गावों में परम्परागत कार्य करने वाले बुनकर जो अनुसूचित जाति वर्ग से जुडे है जो स्वयं के खर्चे से या वित्तीय संस्थाओं से वित्त पोषण लेकर लकड़ी/लोहे से बने हाथकरघा पर खैसला, टॉवेल, पायदान कोट–कोटी के कपडे का निर्माण करते है। मुख्यतः गाव लेटा एवं भवरानी में लोग बुनकरी कार्य करते है ।ग्राम लेटा में करीबन 75 कारीगर इस उद्यम से जुड़े हुए है जो इस जिले का नाम रोशन कर रहे है। इनका हस्तनिर्मित उत्पादन जालोर के अलावा अन्य पड़ौसी जिले में भी बिकी हेतु लोग भेजते रहते है। धागा पाली से कय करते है। इसके अलावा ग्राम लालपुरा, डीगांव, भंवरानी, जैलातरा, सांकड़, भैंसवाड़ा, सेवाड़ा, वोढा आदि गावों में भी इक्के दुक्के कारीगर इस उद्यम से जुड़े हुए है। इस प्रकार जिले में लगभग 190 लोग इस उद्यम से जुड़े है। मार्केटिंग

की कमी के कारण लोग इसमें रूची कम ले रहे है। राज्य सरकार को इनके उत्पादों हेतु कार्ययोजना बनानी चाहिए।

15.2 हाथकरघा इकाईयों की संख्याः— जिलें में कुल करीबन 120 लूम्स स्थापित है। जिसमें लगभग 190 बुनकर कार्यरत है

15.3 हाथकरघा क्षेत्र की सोसायटी :— जिलें चार हाथकरधा सोसायटी वर्तमान में कार्यरत है

1. लेटा व.उ.स.समिति लेटा
2. न्यू लेटा व.उ.स. समिति लेटा
3. जैलातरा व.उ.स.स. जेलातरा
4. डीगांव व.उ.स.समिति एवं बुनकर संघ जालोंर में स्थापित नही है।

15.4 हेण्डलूम कलस्टर — हेण्डलूम कलस्टर जिले में नहीं है। कारीगर अपने अपने घरों में बुनकरी का कार्य करते है। आवश्यक सर्वे के पश्चात ग्राम लेटा में कलस्टर स्थापित किया जा सकता है ।

15.5 नेचर डाई एवं ब्लॉक प्रिंटिंग कलस्टर :— इस जिले में इस प्रकार का कोई भी उद्योग स्थापित नहीं है ।

15.6 हेण्डलूम बुनकर कार्ड धारकों की संख्या :— जिले में करीबन 190 हेण्डलूम बुनकर कार्ड होल्डर होंगे।

❖ हेण्डीक्राफ्टस

16.1 हेण्डीक्राफ्ट कार्य करने वाले श्रमिक :— जिलें में कार्यरत हेण्डीक्राफट वर्कर करीबन 100—125 के आस—पास है।

16.2 पंजीकृत उद्योग आधार :— इस जिले में 10 हेण्डीक्राफट उद्योग आधार मेमोरेण्डम 31.03.20167 तक जारी हुए है। एवं जारी उद्योग आधार 516 माह मार्च 2018 में जारी किये गये ।

16.3 विभिन्न कलस्टर :— इस जिले केभीनमाल में चर्म जूती कलस्टर की प्रबल संभावना है । जहां बहुतायात लोग कलात्मक चर्म जूती हाथ से निर्मित करते है। भीनमाल में वर्तमान में इनके लिए सोयायटी गठन हेतु इन्हें प्रेरित किया है ंइनके उत्पाद की राज्य के अलग—अलग जिलों में मांग के अनुसार

बिक्री करते है। इसके अतिरिक्त ग्रेनाइट एवं हाथकरधा से संबंधित उत्पादों के कलस्टर की संभावना तराशी जा सकती है ।

16.4 आर्टीजन कार्ड वितरण :– इस जिले में करीबन 1000–1100 के आस पास आर्टीजन कार्ड धारी दस्तकार शिल्पी है ।

- **सांराश :–** जालोर शहर में औद्योगिक क्षेत्र चतुर्थ चरण की स्थापना एवं सांचौर/रानीवाडा में ग्रोथ सेंटर की स्थापना तथा जिला उद्योग केन्द्र, जालोर में रिक्त पदों का भरा जाना अत्यावश्यक है।
- **रियायत और सुविधांए :–** राजस्थान विनिवेश प्रोत्साहन योजना 2014 में नये व विस्तार के तहत किये गये विनियोजन पर सुक्ष्म लघु उद्योग एवं मध्यम उद्योगों को विशेष रियायतें एवं छूट का प्रावधान है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना में नये उद्योगों को अधिकतम 25.00 लाख एवं सेवा के लिए 10.00 लाख ऋण का प्रावधान है तथा इस पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में केटेगरी वाईज 15–35 प्रतिशत मार्जिन मनी (अनुदान) की सुविधा है। साथ ही भामाशाह रोजगार सृजन योजना में व्यापार/सेवा हेतु 1000000 रूपये एवं उद्योग हेतु अधिकतम 2500000 लाख रूपये तक का ऋण का प्रावधान है जिसमें वर्ष 2016 से 8 प्रतिशत ब्याज अनुदान एवं उससे पहलें ऋण पर 4 प्रतिशत ब्याज अनुंदान देय है । चर्म शिल्प विकास में 15000/– अनुदान की सुविधा है।
- **Annexure- I :पंजीयन करने के लिए किससे सम्पर्क करें**

  जिला स्तर पर जिला उद्योग केन्द्र से सम्पर्क किया जा सकता है।जिसके दूरभाष नंम्बर 02973–222381 है। एवं किसी भी ईमित्र के जरिये ईएम /उद्योग आधार जारी करवाया जा सकता है।
- **Annexure-II : देश में लघु उद्योगों को बढ़ावा देने वाले उद्योगों के नाम व पतें :–**जालोर में ग्रेनाईट स्लेब व टाईल्स आधारित 1400–1500 सूक्ष्म एवं लघु उद्योग इकाईयां कार्यशील है। यानि जालोर शहर ग्रेनाईट नगरी के नाम से जाना जाता है। तथा ऐशिया की ग्रेनाईट मंडी के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार सांचौर में स्टील के पाईप बनाने के उद्योग है। बड़े उद्योगों के नाम निम्न प्रकार से हैः–

1. मैसर्स इनानियां एक्सपोर्ट प्रा. लि. बिशनगढ़ रोड़ जालोर

2. मैसर्स श्री राम ग्रेनीमार्मो प्रा. लि. औद्योगिक क्षेत्र द्वितीय चरण जालोर
3. मैसर्स फतेह ग्रेनाईट प्रा.लि. भागली चौराहा जिला जालोर
4. मैसर्स महादेव ग्रेनाईट प्रा.लि. धानपुर जिला जालोर
5. मैसर्स कृष्णा स्टॉन प्रा.लि. औ.क्षेत्र तृतीय चरण जालोर
6. मैसर्स स्कोरडाईट स्टेनलेस (इण्डिया) प्रा.लि. माखोपुरा रोड़ रीको औ.क्षे. सांचौर।
7. मैसर्स एंजल पाईप एण्ड टयूब प्रा.लि. माखोपुरा रोड़, रीको औ.क्षे. सांचौर।
8. मैसर्स.जालोर सिरोही दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति लि0,रानीवाडा